International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

अनादितत्व ईश्वर व सृष्टि रचना की वैदिक प्रक्रिया

डॉ.सत्यवती[1], शंकर लाल[2]

[1]आचार्य संस्कृत, माँ जालपा देवी राजकीय महाविद्यालय, तारानगर, चूरु (राजस्थान)
[2]सहायक आचार्य भौतिक शास्त्र, माँ जालपा देवी राजकीय महाविद्यालय, तारानगर, चूरु (राजस्थान)

सारांश

सृष्टियुत्पत्ति तथा इससे जुड़े सभी रहस्यों को जानने के लिए परमपिता परमात्मा ने वेद ज्ञान रूपी बुकलैट प्रारंभ में ही ऋषियों के माध्यम से दे दी है जिस प्रकार कम्प्यूटर, मोबाइल व लैपटॉप बनाने वाला इनकी बुकलैट (manual)देता है। जो ज्ञान इनके कर्त्ता को है वह दूसरे प्राणियों को उतना नहीं। ठीक इसी प्रकार सृष्टि की रचना, धारण और प्रलय आदि कार्यो की जानकारी परम वैज्ञानिक ईश्वर को है। अंत में मैं निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि वेदों में सभी विद्याएँ, सभी पदार्थों का ज्ञान सूत्र रूप में दिया हआ है, यदि विज्ञानवेत्ता और वेदवेत्ता दोनों परस्पर मिलकर शोध करें तो इस सृष्टि के कई अनुतरित प्रश्नों के समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

वेद ज्ञान के अक्षय भण्डार हैं। ये संपूर्ण मानव जाति के प्रकाश स्तंभ हैं। वेद भारतीय साहित्य ही नही, संपूर्ण विश्व साहित्य की प्रथम पुस्तक हैं। वेद–ज्ञान सार्वभौमिक, सर्वकालिक व सार्वदेशिक है जिसमें किसी प्रकार का विभेद दृष्टि गोचर नहीं होता। वेदों में तथा कथित जाति, लिंग,धर्म, मत, पंथ आदि से दूर सर्व प्राणिमात्र के कल्याण की कामना का स्वर सुनाई देता है। विश्व के सभी धर्म ग्रन्थों में अपने–2 ढंग से जगत् का सृजन करने वाली सत्ता का किसी न किसी रूप में वर्णन प्राप्त होता है। उस परम सत्ता के स्वरूप व अस्तित्व के संबन्ध में मत विभिन्नताएँ हो सकती हैं परंतु इतना निश्चित है कि जिसे आस्तिक जन–समुदाय ब्रह्म ईश्वर, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान आदि नामों से अभिहित करते हैं, उस अनादि तत्त्व ईश्वर का वर्णन सर्वप्रथम वेदों में ही हुआ है।"वेदों में तीन अनादि व नित्य तत्वों अर्थात ईश्वर, जीव व प्रकृति का वर्णन प्राप्त होता है। (क) ईश्वर सत् चित् आनन्द युक्त, अनादि तथा अनन्त विज्ञानवान् (ख) जीव अल्पज्ञ, चेतन और ज्ञानवान् है। ये दोनों व्याप्य–व्यापकभाव से संयुक्त होकर एक ही वृक्ष पर मित्रवत् रहते है। (ग) प्रकृति अव्यक्त परमाणु रूप, जड़ व ज्ञान शून्य है।"1 जड़ पदार्थ न स्वयं को जानते हैं, न दूसरों को जान सकते हैं। संसार के सभी पदार्थ दो भागों में बांटे गए हैं। एक नित्य और दूसरे अनित्य, नित्य जो सदा बने रहते हैं जैसे ईश्वर, जीव और प्रकृति। इन तीनों का कोई रंग रूप नहीं हैं।"ये मनुष्यों की इंद्रियों की पहुँच से परे हैं। इंद्रियों की पहुँच यंत्रो की सहायता से बहुत दूर तक जा सकती है।(टेलिस्कोप) बहत दूर तक दृष्टि को पहंचा देती है। इसकी सहायता से करोडों, पद्म मील की वस्तु भी देखी जा सकती है। (माइक्रोस्कोप) अति सूक्ष्म वस्त को देखने में सहायक होती है। बढ़िया माईक्रोस्कोप से किसी वस्तु को लाखों गुणा बड़ा कर दिखाया जा सकता है परन्तु कहा जाता है कि ये तीनों पदार्थ इन यंत्रों की पहुंच से भी परे हैं। इस कारण ये इन्द्रियों की पहुंच से भी बहुत परे हैं। प्रश्न उत्पन्न होता है कि जब ये पहुंच से ही परे हैं तो फिर इनकी उपस्थिति कैसे मानी जाये? यही कारण है कि वर्तमान

विज्ञान इनको नहीं मानता परन्तु यह तो बुद्धि को स्वीकार नहीं कि शून्य से यह दृश्य जगत बन गया। कुछ नहीं से कुछ नहीं बन सकता। मूल में कुछ होना पड़ता है अन्यथा जगत के विभिन्न पदार्थों का बनना बुद्धि सम्मत नहीं है। इस प्रकार सृष्टि के प्रारंभ से ईश्वर, जीव, व प्रकृति सृष्टि रचना आदि दार्शनिक तत्व मानव के लिए जिज्ञासा के विषय बने हुए हैं। इन्हीं तत्वों के समझने समझाने में तत्वद्रष्टा वैज्ञानिक ऋषि–महर्षि व विद्वानों ने अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। अनेकों शोध होने के पश्चात्भी शोध करना शेष है और यह शोध निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इन अनादि तत्वों के संबंध में विभिन्न दार्शनिक मान्यताएं दृष्टिगोचर होती हैं। सभी के चिंतन का मुख्य विषय यह भौतिक जगत, जीव और ईश्वर ही रहे हैं। मानव मस्तिष्क में प्रश्न उठता है कि जीव और प्रकृति के मध्य ऐसी कौन सी शक्ति है जिसके नियमों में संपूर्ण संसार बंधा हुआ है। हमारे न चाहनेपर भी मृत्यु आकर घेर लेती है। न चाहते हुए युवावस्था वृद्धावस्था में परिणत हो जाती है। सूर्य, चंद्र, नक्षत्र व भूगोल आदि किसने बनाए तथा इनका नियामक व व्यवस्थापक कौन है? इस जड़ जगत् का कर्ता मैं (जीव) तो नहीं? तो क्या यह स्वयं बन गया? इन अचेतन तत्वों में प्रथम गति कैसे उत्पन्न हुई? उपादान कारण से कार्य तभी बनता है जब उसका कोई निमित्त कारण होता है। मनुष्य कृत वस्तुएँ सिद्ध कोटि में आती हैं, उन वस्तुओं को देखकर कर्ता का ज्ञान होता है। उदाहरण के लिए आधुनिक तकनीकी मोबाइल, लैपटॉप आदि को देखकर यह निश्चित करते हैं कि इनके बनाने वाले हैं, ये स्वंय नही बने है और ये मनुष्य के अत्यधिक उपयोगी और सहयोगी हो गए हैं। इन दोनों के बेजान पुर्जे न स्वंय बन सकते हैं और न स्वयं व्यवस्थित रूप से जुड़कर कार्य कर सकते हैं। इनका निर्माता, व्यवस्थापक कोई चेतन प्राणी अवश्य है। मनुष्य का अमूल्य शरीर जिसके एक–2 अंग अत्यंत उपयोगी व सुव्यवस्थित हैं,जो अंग जहाँ होना चाहिए ठीक वहीं पर है, उससे अलग नहीं। चिकित्सा विज्ञान ने शरीर विज्ञान के संबन्ध में नित नए शोध करके अभूतपूर्व कार्य किया है तथा मानव शरीर के ढाँचे को जान लिया है परंतु अभी तक भी कोई यह नहीं बता सका कि गर्भ में जीव ने कब प्रवेश किया या शरीर से प्राण निकला, कितना सूक्ष्म या स्थूल था? अर्थात् प्राण (आत्मा, जीव) का आना और शरीर से जाना, इनको अब तक भी नही जान सके हैं। ठीक इसी प्रकार वे सभी पदार्थ जो साध्य कोटि में आते हैं जैसे – नदी, पर्वत, सूर्य, चंद्र, भूगोल आदि इनकी रचना तथा धारण करने वाला कौन है? सूर्य,पृथिवी से लगभग 15 हजार करोड़ किलोमीटर दूर स्थित है, सूर्य पृथिवी के कुछ पास आ जाए तो सबकुछ भस्म हो जाएगा, यदि कुछ उपर चला जाएँ तो पृथिवी पर जीवन जम जाएगा अर्थात् सृष्टि के प्रारंभ से ही सूर्य अपनी परिधि में कार्य करता है। सूर्य, चन्द्रादि की गति व्यवस्थित है तभी ज्योतिर्विद् वर्षो पूर्व सूर्य ग्रहण व चन्द्रग्रहण की सही स्थिति बता देते हैं। सृष्टि के सब व्यवस्थित कार्यो को देखकर अनुमान होता है कि अत्यंत बुद्धिमान परम् वैज्ञानिक ही इस व्यवस्थित सृष्टि का नियामक व व्यवस्थापक है। बिना कर्त्ता के अचेतन (जड़) परमाणु सृष्टि के निर्माण में समर्थ नहीं हो सकते? फिर"यह सृष्टि किससे उत्पन्न हुई? इसका अध्यक्ष कौन है? यह विविध सृष्टि किस निमित्त कारण से और किस उपादान कारण से उत्पन्न होती है?"3 सब लोक लोकन्तरों का धारण कर्त्ता कौन है? वेदों की अंगभूत उपनिषदों में भी इस प्रकार के प्रश्न उत्पन्न होते हैं? श्वेताश्वतरोपनिषद् में वर्णन प्राप्त होता है कि"जगत् का कारण क्या? हम कहाँ से हुए? किसके द्वारा जीवित हैं, किसमें प्रतिष्ठित हैं? किसके द्वारा अधिनिष्ठित हैं?"4 प्रश्नोपनिषद् में प्रश्न किया है

कि"किस प्रसिद्ध और सुनिश्चित कारण विशेष से यह संपूर्ण प्रजा नाना रूपों में उत्पन्न होती है।" 5वह कौन है?"प्राणियों के शरीर को धारण करने वाले कुल कितने देवता है?"6 इन सबमें अत्यंत श्रेष्ठ कौन है?केनोपनिषद् में भी ऐसा ही प्रश्न किया गया है"जड़रूप अंतःकरण प्राण, वाणी आदि कर्मद्रियों और चक्षु, श्रोत्र आदि ज्ञानेन्द्रियों को अपना–अपना कार्य करने की योग्यता प्रदान करने वाला उन्हें अपने–अपने कार्य में प्रवृत्त करने वाला जो कोई एक सर्वशक्तिमान् चेतन है, वह कौन है और कैसा है?"7 पूर्वोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर हमें वेदों से प्राप्त होते हैं। मनुस्मृति 12.17 में कहा है कि"वेदात् सर्वं प्रसिध्यति अर्थात् वेदों से सबकुछ सिद्ध होता है। महर्षि दयानंद सरस्वती ने भी डिंडिम उद्घोष किया कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।"8 इस दृढ़ विश्वास के साथ कहा कि वेद के अनुसार इस दृश्य मान् जगत् का अध्यक्ष या स्वामी वह ईश्वर एक तथा अनादि है। सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास के प्रारंभ में स्वामी जी लिखते हैं कि"हे मनुष्य! जिससे यह विविध सृष्टि प्रकाशित हुई है, जो धारण और प्रलय कर्त्ता है, जो इस जगत् का स्वामी है"[क]जिस व्यापक में यह सब जगत् उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय को प्राप्त होता है, सो परमात्मा है, उसको तू जान और दूसरे को सृष्टिकर्त्ता मत मान।"[ख]"हे मनुष्यो! जो सब सूर्यादि तेजस्वी पदार्थों का आधार और जो यह जगत् हुआ था, है और होगा उसका एक अद्वितीय पतिपरमात्मा इस जगत् की उत्पत्ति से पूर्व विद्यमान था और जिसने पृथिवी से लेके सूर्य्यपर्यन्त जगत् को उत्पन्न किया है"[ग] 9 स्वामी जी ईश्वर, जीव और जगत् के मूल कारण (प्रकृति) को अनादि मानते हैं तथा इसमें ऋ.के 1.164.20 मंत्र को प्रमाण मानते हैं। अथर्ववेद के एक मंत्र में व्यक्त किया गया है"तीनो कालों के क्रिया कलापों को जानने से वह सबका अधिष्ठाता है।"10 तीनो कालों को वही जान सकता है जो आदि में तथा अंत पर्यन्त रहे,इससे वह ईश्वर अनादि है। ऋग्वेद के अनुसार"द्युलोक और पृथिवीलोक को उत्पन्न करने वाला वह देव (ईश्वर) एक ही है।"11 इसी सूक्त के छठे मंत्र में वर्णन प्राप्त होता है कि"प्रलय काल मेंद्युलोक, पृथिवी आदि लोकों को सूक्ष्म करके परमात्मा अपनी ग्रहण शक्ति से अपने अंदर लेता है अर्थात् लीन कर लेता है।"12 ऋग्वेद 10.82.3 में वर्णित किया है कि"परमात्मा ही सबका उत्पादक, पालक, कर्मफल का देने हारा (विधान) करने वाला सारे जन्म स्थानों व लोक लोकान्तरों को जानने वाला है।"13

इस प्रकार सृष्टि की रचना, धारण, पालन आदि कार्यो से ईश्वर के अनादि होने की सिद्धि होती है। चारों वेदों में ईश्वर से सम्बंधित मंत्र यत्र तत्र प्राप्त होते हैं। जो केवल और केवल ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता, पालन कर्त्ता तथा प्रलय कर्त्ता के रूप में स्थापित करते हैं। सृष्टियुत्पत्ति पर विचार करते हुए प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या यह सृष्टि इसी रूप में सदैव से नहीं है? वे दार्शनिक जो केवल भौतिक जगत् की सत्ता को ही स्वीकार करते हैं, किसी चेतन सत्ता को स्वतंत्र सत्ता या नित्य सत्ता के रूप में स्वीकार नहीं करते। मानव द्वारा नई–2 खोज करने के उपरांत भी ये अनादितत्व तथा सृष्टि रचना आज भी रहस्य बने हुए हैं, इन्हीं रहस्यों की खोज में आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी अत्यधिक प्रयास किये हैं जिनमें वैज्ञानिक डारविन का"विकासवाद का सिद्धांत"जिसे वैज्ञानिक जगत् ने बहुत बड़ी उपलब्धि माना था के अनुसार स्वतः ही प्राणी विकास करते–2 मनुष्य बन गए। यदि विकास की प्रकिया ऐसे ही चलती होती तो आज भी वनों में निवास करने वाली जनजातियां बिना नैमित्तिक ज्ञान के ज्ञान शून्य क्यों है ? साथ ही लगभग 7 अरब की जनसंख्या वाले जगत् में आज अधिकतर लोग काम, क्रोध, ईर्ष्या, भ्रष्टाचार व आतंकवाद के शिकार क्यों हैं? अर्थात् विकास की जगह ह्रास ही ह्रास

दिखाई पड़ता है। जबकि विकासवाद के सिद्धातानुसार संपूर्ण संसार अत्यंत ज्ञानवान् व सुसभ्य होना चाहिए था ? लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। अतः मानना पड़ेगा कि स्वतः कोई क्रिया नहीं होती? अभी कुछ वर्ष पूर्व भौतिकी व ब्रह्माण्ड भौतिकी के विश्व प्रतिष्ठित विद्वान स्टीफन हॉकिंग नेब्रह्माण्ड की उत्पत्ति को जानने का दावा करते हुए Big Bang नामक सिद्धांत की खोज की है। इस सिद्धांत के अनुसार आज लगभग 15 बिलियन (15 अरब वर्ष) पहले घने पदार्थो वाले विशाल अग्निपिंड के आकस्मिक जोरदार विस्फोट तथा उससे जनित विकिरण के कारण ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हई है। इनका मानना है कि 15 अरब वर्ष पहलेएक विशालकाय अग्नि पिण्ड था जिसकी रचना भारी पदार्थों से हुई थी। इस विशाल अग्नि पिण्ड में अचानक विस्फोट होने से पदार्थों का बिखराव हो गया जिन्हें सामान्य पदार्थ कहा गया। इन पदार्थों के बिखराव के कारण काले पदार्थो का सृजन हुआ। इन काले पदार्थो का आपस में समेकन होने से अनेक पिंडो का निर्माण हुआ, फिर आकाशगंगा का, उसके बाद तारों का, तारों के विस्फोट से ग्रहों का निर्माण हुआ। स्टीफन हॉकिंग का मानना है कि ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति में Physics में गुरुत्वाकर्षण के अपरिहार्य नियम जिम्मेदार हैं, न कि ईश्वर? सृष्टि रचना में ईश्वर की कोई भूमिका नहीं है? यह संसार तो केवल स्वतः ही शून्य से अस्तित्व में आ गया तथा मानव रचना भी प्रकृति के भौतिक कणों का ही संकलन मात्र है। इस प्रकार भौतिक विज्ञान का मानना है कि परमाणुओं से सृष्टि की रचना स्वतः हो जाती है किसी अद्वितीय सत्ता या ईश्वर की आवश्यकता नहीं है? जबकि वेद के अनुसार परमाणुओं में स्वयं सृष्टि रचना की क्षमता न पूर्व में थी न आज है और न आगे होगी। हम देखते हैं कि दृश्यमान् जगत् का छोटे से छोटा उपकरण भी स्वयं नहीं बन सकता फिर सृष्टि जैसी जटिल रचना 'शून्य' से कैसे सम्भव हो सकती है? यहाँ प्रश्न उत्पन्न होता है कि 'स्टीफन हॉकिंग' महोदय ने जिस अग्निपिंड के विस्फोट से ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति मानी है, उस अग्निपिंड का निर्माता कौन है? जिसमें विस्फोट होकर ही आगे की प्रक्रिया हुई। क्या अग्निपिंड स्वयं बन गया? संसार का सबसे प्राचीनत्तम ज्ञाननिधि वेद, जिन्हें भारतीय मनीषा में अपौरुषेय भी माना है। वेद में स्थान–स्थान पर वर्णन प्राप्त होता है कि इस सृष्टि की रचना का निमित्त कारण वह परमपिता परमात्मा है तथा उपादान कारण प्रकृति है, जो सृष्टि की रचना से पूर्व प्रलयावस्था में उस चेतन सत्ता में ही कारण रुप मे लीन रहती है, उसका अभाव कभी नहीं होता। शून्य (असत्) से सत् की उत्पात्ति कभी नहीं हो सकती? योगिराज श्रीकृष्ण गीता के द्वितीय अध्याय के श्लोक में लिखते हैं कि"असत् वस्तु की कभी सत्ता नहीं होती तथा सत् वस्तु का कभी अभाव नहीं होता। इन दोनों रहस्यों को तत्वदर्शी ज्ञानियों ने जाना है।"14महर्षि दयानन्द सरस्वती सृष्ट्युत्पत्ति के संबन्ध में लिखते हैं कि,"सबसे सूक्ष्म टुकड़ा अर्थात् जो काटा नहीं जाता उसका नाम परमाणु, साठ परमाणुओं के मिले हुए का नाम अणु, दो अणु का एक द्वयणुक जो कि स्थूल वायु है, तीन द्वयणुक का अग्नि, चार द्वयणुक का जल पांच द्वयणुक की पृथिवी अर्थात् तीन द्वयणुक का त्रसरेणु और उसका दूना होने से पृथिवी आदि दृश्य पदार्थ होते हैं। इसी प्रकार क्रम से मिलकर भूगोलादि परमात्मा ने बनाये हैं।"15 ऋग्वेद के 10 वें मण्डल का प्रसिद्ध 'नासदीय सूक्त' सृष्टि रचना से पूर्व का सटीक वैज्ञानिक वर्णन प्रस्तुत करता है। ऋग्वेद के ही 10.190 वें सूक्त के प्रथम मन्त्र में वर्णित हुआ है कि"परमात्मा अपने ऋत व सत्य रूपी तप से मूल कारण प्रकृति से सृष्टि की रचना करता है।"16 उसी परमेश्वर ने "रात्रि, समुद्र, संवत्सर आदि बनाये हैं, वही सूर्य, चन्द्रादि को उत्पन्न करके धारण करता है। जैसे पूर्व में सृष्टि की

उत्पत्ति की है, ठीक इसी प्रकार अब भी कर रहा है।"17 ऋग्वेद के 10 वें मण्डल का प्रसिद्ध सूक्त जो 'पुरुष' सूक्त के नाम से विख्यात है तथा यजुर्वेद का 31वें अध्याय के रुप में प्रसिद्ध है। इस सम्पूर्ण सूक्त में सृष्टि उत्पत्ति का विशद् वर्णन किया गया है। वेदों के समर्थक दर्शनों में भी सृष्टि रचना का वर्णन प्राप्त होता है। सृष्ट्युत्पत्ति के संदर्भ में सांख्य दर्शन का सिद्धांत लगभग सर्वमान्य है। इस दर्शन के अनुसार"सत्व, रज और तम इन तीनों की साम्यवस्था का नाम प्रकृति है, प्रकृति से महत्तत्व (बुद्धि महत्तत्व से अहंकार, अहंकार से पंचतंत्रमात्राएँ, पंच तन्मात्राओं से पृथिव्यादि पञ्च भूत आदि चौबीस तथा पच्चीसवें जीव तथा परमात्मा से सृष्टि की उत्पत्ति होती है।"18 आधुनिक विज्ञान सत्व, रज और तम को 'इलैक्ट्रोन,' न्यूट्रॉन, प्रोट्रोन के नाम से अभिहित करता है।"वर्तमान विज्ञान भी मानता है कि इन एटॉमिक पार्टिकलों से बने पदार्थों से कथित जगत् की सब वस्तुएँ बनी हैं। जब परमाणु असाम्यावस्था में हो जाते हैं"अर्थात् जब बहिर्मुख हो जाते हैं और फिर उनमें आकर्षण विकर्षण के कारण गति उत्पन्न होती है और तब परमाणुओं के निबन्धन बन जाते हैं। ये निबन्धन ही एटामिक पार्टिकल है।"19 अर्थात् परमात्मा के तेज से सत्व, रज और तम गुण (इलेक्ट्रॉन, न्यूट्रॉन व प्रोटॉन) संतुलित न रह करके बहिर्मुखी हो जाते हैं तथा इनमें आकर्षण विकर्षण का गुण पैदा हो जाता है। इसी आकर्षण–विकर्षण के द्वारा परमात्मा अपनी ज्योति (तेज) से सृष्टि का निर्माण करता है। तैत्तिरीयोपनिषद् के अनुसार उस परमेश्वर और प्रकृति से सर्वप्रथम आकाश, आकाश के बाद वायु, वायु के बाद अग्नि अग्नि के बाद जल, जल के बाद पृथिवी पृथिवी से औषधि, औषधियों से अन्न, अन्न से वीर्य, वीर्य से पुरुष अर्थात शरीर उत्पन्न होता है।"20 इस प्रकार सत्यार्थ प्रकाश उपनिषदों व वेदों के प्रमाणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि सृष्टि की रचना ईश्वर ने ही की है। हमें इस बात पर गर्व होना चाहिए कि वेद के अंदर जो कुछ कहा गया है वह मात्र कहने की बात नहीं है, वह तथ्य पूर्ण बात है। आवश्यकता केवल इसबात की है कि इन वैदिक सिद्धान्तों के विषय में अधिक से अधिक अनुसन्धान किया जाये। भौतिक विज्ञान जिसे शून्य की संज्ञा दे रहा है तथा जिसे सृष्ट्युत्पत्ति का कारण मानते है उससे सृष्टि रचना कभी सम्भव नहीं है। 19 वीं शताब्दी के महान् वेद भाष्यकार महर्षि दयानंद सरस्वती ने उद्घोष किया कि"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।"वे केवल शब्द मात्र से नहीं कहते अपितु 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' जो उन्होंने वेदों का भाष्य करने से पूर्व लिखी, उसमें घोषणा की कि "वेद में आधुनिक विज्ञान है। यह केवल घोषणा नहीं थी अपितु 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' तथा वेदों में मूल विज्ञान के मंत्रों को तथा विज्ञान के बहुत सारे नमूने भी बतलाये थे। ये विज्ञान के सूत्र उस समय दिये, जब तक उन चीजों की खोज आधुनिक वैज्ञानिकों ने नहीं की थी। आज का पाश्चात्य वैज्ञानिक ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति विषयक रहस्यों को कुछ खोज का जो श्रेय ले रहा है, उन रहस्यों को तथा उस परम वैज्ञानिक सत्ता को हमारे ऋषियों, महर्षियों व योगियों ने बहुत पहले समाधिवस्था में अनुभव कर लिया था जिस पर भौतिक विज्ञान आज तक भी नहीं पहुँच पाया है। इसमें निरन्तर शोध की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची–

(1) द्वा सुपर्णा सयुजा सरवाया समानं वृक्षं परिषस्व जाते। त्योरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्न्यो अभिचाकशीति।। ऋग्वेद 1.164.20

(2) सायंस और वेद – द्वितीय अध्याय पृ. 17
(3) को अद्धावेद क इह प्रवोचत्कुत आजाताकुतइयं विसृष्टिः। ऋ. 1.129.6
(4) किंकारणं ब्रह्मकुतः स्मजाताजीवाम केन क्वं च संप्रतिष्ठाः अधितिष्ठिता केन। श्वेताश्वरोपनिषद्1.1
(5) भगवन् कुतोह वा इमाः प्रजाः प्रजायन्त इति। प्रश्नोपनिषद् प्रथम प्रश्न मन्त्र –03
(6) भगवन्कत्येव देवाः प्रजां विधारयन्ते कतर। एतत्प्रकाशयन्ते कः पुनरेषां वरिष्ठ इति। प्रश्नो. द्वितीय प्रश्न मन्त्र – 01
(7) केनोपनिषद् प्रथम खण्ड मन्त्र – 01
(8) आर्य समाज तृतीय नियम
(9) (क) इयं विसृष्टिर्यत अबभुव यदि वा दधे यदि वा।यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अंगवेदयदिवान वेद।। ऋ. 10.129.7
(ख) हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेयम।। ऋ. 10.121.1 सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास पृ.–177
(10) यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति। अथर्ववेद 10.8.1
(11) द्यावा भूमी जनयन् देव एकः। ऋ. 10.81.3
(12) ऋग्वेद 10.81.6
(13) यो नः जनितायोविधाता धामानी वेद भुवनानि विश्वा। ऋ. 10.82.3
(14) नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः। श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय 2.16
(15) सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास पृ. 164
(16) ऋतंच सत्यं चाभीद्धात्तपसोध्यजायत। ऋ. 10.190.1–2
(17) सूर्याचंद्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। ऋ. 10.190.3
(18) सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः। प्रकृतेर्महान। महतोऽहंकारोऽहंकारात् पंचतन्मात्रा ..... स्थूल भूतानि इति पच्विंशतिर्गणः सांख्य दर्शन 1.61
(19) सायंस और वेद पृ 37
(20) तैतिरीयोपनिषद् ब्रह्मानन्द वल्ली प्रथम अनुवाक

संदर्भ पुस्तक सूची–

(1)ऋग्वेद भाष्य (9 भागों में) – स्वामी दयानन्द सरस्वती, प्रकाशक – वैदिक पुस्तकालय अजमेर
(2)यजुर्वेद भाष्य (4 भागों में) स्वामी दयानन्द सरस्वती, प्रकाशक– वैदिक पुस्तकालय अजमेर
(3)अथर्ववेद भाष्य, क्षेमकरणदास त्रिवेदी, प्रकाशक– सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि, सभा महर्षि दयानंद भवन, नई दिल्ली
(4)ऐतरेयोपनिषद, शांकर भाष्य सहित, प्रकाशक– घनश्यामदास जालान गीता प्रेस, गोरखपुर
(5) श्वेताश्वतरोपनिषद शांकर भाष्य सहित, प्रकाशक– घनश्यामदास जालान गीता प्रेस, गोरखपुर
(6)उपनिषद प्रकाश (ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य आदि), स्वामी दर्शनानन्द भाष्य सहित, प्रकाशक– सत्यप्रकाश, वृन्दावन मार्ग, मथुरा,नवम् संस्करण
(7) सत्यार्थ प्रकाश, स्वामी दयानन्द सरस्वती
प्रकाशक–वैदिक यतिमण्डल दयानन्द मठ दीनानगर, पंजाब

(8) सायंस और वेद, गुरुदत्त
हिंदी साहित्य सदन 2 बीडी चैम्बर 10/54 देशबन्धु गुप्ता रोड करोला बाग, नई दिल्ली – 110005
(9) श्रीमद्भगवद्गीतासमर्पण भाष्य, प्रकाशक– आर्य समाज मेरठ नगर द्वारा राधेलाल सर्राफ एन्ड सन्स चैरिटेबल ट्रस्ट षष्ठम् संस्करण 1988